रागों का तुलनात्मक अध्ययन

राग बिलासखानी तोड़ी एवं कोमल रिषभ आसावरी

समता –

- राग बिलासखानी तोड़ी तथा कोमल रिषभ आसावरी – दोनों ही भैरवी थाट के अन्तर्गत माने गए हैं।
- राग बिलासखानी तोड़ी तथा कोमल रिषभ आसावरी – दोनों में रिषभ, गांधार, धैवत और निषाद स्वर कोमल प्रयोग किये जाते हैं।
- राग बिलासखानी तोड़ी तथा कोमल रिषभ आसावरी – दोनों का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गांधार माना गया हैं।
- राग बिलासखानी तोड़ी तथा कोमल रिषभ आसावरी – दोनों का गायन समय दिन का द्वितीय प्रहर माना गया हैं।
- राग बिलासखानी तोड़ी तथा कोमल रिषभ आसावरी – दोनों उत्तरांगवादी राग हैं।

विभिन्नता –

	राग–बिलासखानी तोड़ी	राग–कोमल रिषभ आसावरी
1	राग बिलासखानी तोड़ी, तोड़ी अंग का राग हैं।	राग कोमल रिषभ आसावरी, आसावरी अंग का राग हैं।
2	राग बिलासखानी तोड़ी के आरोह में निषाद अल्प है।	इस राग के आरोह में निषाद वर्जित हैं, परन्तु कभी–कभी अपवाद स्वरूप प ध नि ध, म प – का प्रयोग किया जाता है।
3	राग बिलासखानी तोड़ी की जाति में मतभेद प्राप्त होता हैं, अर्थात् इसकी जाति या तो औड़व–सम्पूर्ण या नही तो षाड़व–सम्पूर्ण मानी जाती हैं।	राग कोमल रिषभ आसावरी की जाति औड़व–सम्पूर्ण मानी जाती हैं।
4	राग बिलासखानी तोड़ी के आरोह में मध्यम (या मध्यम व निषाद) वर्जित हैं।	राग कोमल रिषभ आसावरी के आरोह में गंधार व निषाद वर्जित हैं।
5	राग का स्वरूप– आरोह : सा रे ग प ध सां अथवा, आरोह : सा रे ग, प ध, नि ध सां अवरोह : सां रें नि ध प, ध म ग रे ग, रे सा पकड़ : ध म ग रे ग, रे नि़ ध़, सा	राग का स्वरूप– आरोह : सा रे म प ध सां अवरोह : सां, रें नि ध म प, म ग रे सा पकड़ : ध म प, म ग रे सा